आसियान की ओर

साभार: द हिन्दू
(17 नवंबर, 2017)

हर्ष वी. पंत
(किंग्स कॉलेज लंदन में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रोफेसर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (शासन व्यवस्था) से संबंधित है।

फिलीपींस, मनीला के साथ पिछले कुछ दिनों से दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) - भारत और पूर्वी एशिया के सम्मेलनों की मेजबानी के साथ-साथ आसियान की 50 वीं वर्षगांठ, क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) के विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है। विश्व के बड़े-बड़े नेताओं की इस बैठक में और आसियान व्यापार और निवेश शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस बैठक में श्एक्ट ईस्टश पॉलिसी के हिस्से के रूप में आसियान सदस्य देशों और व्यापक भारत-प्रशांत क्षेत्र के साथ संबंधों को गहरा करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए इन बैठकों में शामिल हुए।

वैश्विक राजनीति का केंद्र: भारत-प्रशांत क्षेत्र अब वैश्विक राजनीति और आर्थिक दृष्टि से केंद्र बना हुआ है और हाल के दिनों ने कुछ समय के लिए उभरने वाले रुझानों को मजबूत किया है। चीन इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में खड़ा है और जैसा कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने हाल ही में कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस में अपने भाषण में स्पष्ट किया था कि बीजिंग अब क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति का प्रोजेक्ट करने की तुलना में अधिक आश्वस्त है। इसमें चीन को यू.एस. में एक प्रशासन होने का अच्छा सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसमें उद्देश्य की गंभीरता नहीं है और इस क्षेत्र के लिए प्रभावी रूप से अपनी प्राथमिकताओं का संचार करने में असमर्थ है। इससे भारत जैसे देशों के लिए संक्रमण की यह अवधि बहुत महत्वपूर्ण है जो इस क्षेत्र की दीर्घकालिक स्थिरता में हिस्सेदारी रखती है।

15 वीं आसियान-भारत शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने कहा कि आसियान के साथ भारत का संबंध अपनी विदेश नीति का एक प्रमुख स्तंभ है। भारत के अधिनियम ईस्ट पॉलिसी का जिक्र करते हुए उन्होंने रेखांकित किया कि भारत-प्रशांत क्षेत्र की क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला में इसकी केंद्रीयता स्पष्ट है। उन्होंने आतंकवाद पर भी ध्यान केंद्रित किया और सुझाव दिया, यह समय है कि हम संयुक्त रूप से सहयोग को तेज करके इस चुनौती का समाधान ढूंढ सकते है। इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में एक प्रतीकात्मक कदम के साथ बैठक में शामिल हुए सभी देशों के सभी 10 आसियान प्रमुखों को अगले साल गणतंत्र दिवस समारोह में मेहमान के रूप में सम्मान करने के लिए आमंत्रित भी किया है। चीन को लक्षित करने के संबंध में श्री मोदी ने आसियान को नियम-आधारित क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला को प्राप्त करने के लिए स्थिर समर्थन का आश्वासन दिया जो क्षेत्र के हितों और उसके शांतिपूर्ण विकास के लिए सबसे अच्छा साबित होंगे।

पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन, जिसमें भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अमेरिका और रूस शामिल हैं। 10 आसियान सदस्य देशों के अलावा, मोदी ने आसियान के प्रमाण पत्रों को रेखांकित करने का एक और मौका भी दिया। आसियान एक महान वैश्विक विभाजन के समय हुआ था, लेकिन आज यह अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है, यह आशा की एक किरण के रूप में चमक रहा है और यह शांति और समृद्धि का प्रतीक है।

चूंकि चीन की प्रोफाइल बढ़ती जा रही है और यू.एस. को अपनी सुरक्षा प्रतिबद्धताओं के बारे में अनिश्चितता बनी हुई है, इसलिए इस क्षेत्र में भारत के लिए एक नया मौका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एशिया की यात्रा के दौरान मिश्रित संकेत दिए थे, जहां उन्होंने अपनी अमेरिका फर्स्ट पॉलिसी पर पूर्ण रूप से प्रदर्शन पर थी।

शक्ति के संतुलन के लिए: इस बीच, वास्तव में चीन वास्तव में खुली और नि: शुल्क वैश्विक व्यापार व्यवस्था के एक प्रकाश के रूप में उभरने में कामयाब रहा है। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय शक्तियां क्षेत्रीय आर्थिक और सुरक्षा व्यवस्था को आकार देने के लिए स्वयं पर ले जा रही हैं। एक तरफ, यू.एस. के बिना ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (टीपीपी) को पुनर्जीवित किया जा रहा है और दूसरी तरफ जापान, ऑस्ट्रेलिया, भारत और यू.एस. को शामिल करने वाला भारत-प्रशांत चतुर्भुज का विचार वापस आ गया है। अतीत में, नई दिल्ली अन्य क्षेत्रीय खिलाड़ियों के साथ जुड़ने से अब तक कोई फर्क नहीं पड़ता है, अगर इस क्षेत्र में सत्ता के एक स्थिर संतुलन बनाए रखने में भारतीय हितों को आगे बढ़ाने में मदद करता है।

आसियान के सदस्य और भारत में लगभग 1.8 अरब की कुल आबादी है, जो सबसे बड़े आर्थिक क्षेत्रों में से एक है। आसियान वर्तमान में भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जो भारत के कुल व्यापार का 10.2% हिस्सा है। भारत-आसियान का सातवां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। भारत की सेवा उन्मुख अर्थव्यवस्था पूरी तरह से आसियान देशों के विनिर्माण आधारित अर्थव्यवस्थाओं को पूरा करती है। हालांकि, आगे विकास के लिए काफी संभावनाएं हैं। सुरक्षा चुनौतियां हमेशा से चिंता का विषय बनी रही हैं और दोनों पक्षों को रणनीतिक रूप से लगता है कि क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए ऊर्जा के अनुकूल संतुलन के लिए सहयोग बढ़ाने की जरूरत है।

भारत को घरेलू आर्थिक सुधारों के एजेंडे को बढ़ाने, क्षेत्र के भीतर कनेक्टिविटी बढ़ाने और क्षेत्रीय संस्थानों में अपनी उपस्थिति बढ़ाने से आसियान के एक लाभकारी रणनीतिक साझेदार के रूप में एक अधिक ठोस कार्य करने की आवश्यकता है। आसियान राष्ट्रों को नई दिल्ली से उनकी अपेक्षाओं में स्पष्ट और अधिक विशिष्ट होना चाहिए और एक गहरी, अधिक व्यापक-आधारित संबंध के लिए भारत की ओर इशारा करना चाहिए। दोनों पक्षों के लिए बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है।

संबंधित तथ्य

आसियान के 50 साल

- 31वें आसियान (दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों के संघ) शिखर सम्मेलन को फिलीपींस के मनीला में आयोजित किया गया था। फिलीपींस के राष्ट्रपति रोड्रिगो दुतेर्ते ने शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस शिखर सम्मेलन का विषय "Partnering for Change, Engaging the World" है।
- आसियान बिजनेस एंड इंवेस्टमेंट शिखर सम्मेलन (एबीआईएस) 2017, 12 नवंबर से 14 नवम्बर तक आसियान बिजनेस एडवाइजरी काउंसिल (एबीएसी) का 3 दिवसीय सम्मेलन था।

प्रधानमंत्री मोदी की फिलीपींस यात्रा और 31वें आसियान शिखर सम्मेलन के महत्वपूर्ण अंश-

बैठक आयोजित / समझौतों पर हस्ताक्षर किए-

1. आसियान आर्थिक समुदाय (एईसी) परिषद की बैठक का आयोजन,
2. 16वीं आसियान राजनीतिक-सुरक्षा समुदाय (एपीएससी) परिषद की बैठक का आयोजन,
3. 20वीं आसियान समन्वय परिषद (एसीसी) की बैठक का आयोजन,
4. आसियान कनेक्टिविटी (एमपीएसी) 2025 वीडियो पर मास्टर प्लान शुरू किया गया।
5. क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी मंत्री बैठक (आरसीईपी एमएम),
6. आसियान-हांगकांग निवेश समझौते (एएचकेआईए) के साइड समझौते पर हस्ताक्षर किए।
7. आसियान-हांगकांग, चीन (एएचकेएफटीए) मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर।

भारत की बैठक/द्विपक्षीय वार्ता -

1. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिलीपींस में अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आईआरआरआई) का दौरा किया। संस्थान चावल के बीज की बेहतर गुणवत्ता के विकास और भोजन की कमी के मुद्दे को संबोधित करने के लिए काम कर रहा है।
2. भारत-अमेरिकी द्विपक्षीय वार्ता- प्रधानमंत्री मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने मनीला में आसियान शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय वार्ता का आयोजन किया। दोनों नेताओं ने सुरक्षा और सुरक्षा सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की. उन्होंने यह संकल्प किया है कि 'two of the world's great democracies should also have the world's greatest militaries".
3. रक्षा समझौते और रसद, कृषि और सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यमों- एमएसएमई और भारत के विश्व मामलों के भारतीय परिषद और फिलीपींस विदेशी सेवा संस्थान के बीच घनिष्ठ संबंधों को स्थापित करते हुए भारत और फिलीपींस में चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।
4. प्रधानमंत्री मोदी ने ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री मैल्कम टर्नबुल के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। अपनी संक्षिप्त बैठक में, दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों सहित आपसी हित के मुद्दों पर विचार विमर्श किया।

पृष्ठभूमि

- आर्थिक-सामाजिक विकास के साथ सांस्कृतिक संबंधों में मजबूती के लिए 8 अगस्त, 1967 को दक्षिण-पूर्व एशिया के पांच देशों इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपींस, सिंगापुर और थाईलैंड ने मिलकर एसोसिएशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशंस (आसियान) की स्थापना की।
- पिछले 50 सालों के दौरान न सिर्फ यह संगठन आकार में बड़ा है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी इसका असर भी बढ़ा है। ब्रुनेई, कंबोडिया, वियतनाम, म्यांमार और लाओस को मिलाकर इसके सदस्य देशों की संख्या 10 हो गई है।

आसियान प्लस

- वर्ष 1977 के एशियाई आर्थिक संकट के दौरान थाईलैंड में हुई बैठक में इस संगठन में चीन, जापान और दक्षिण कोरिया को मिलाकर आसियान प्लस नामक मंच का गठन किया गया। बाद में ईस्ट एशिया समिट के बैनर तले भारत, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया को भी इसमें शामिल कर लिया गया। इस तरह आसियान प्लस नामक मंच अस्तित्व में आया।

अमेरिका और रूस भी जुड़े

- वर्ष 2011 में छठे ईस्ट एशिया समिट में आसियान को और विस्तार देते हुए इसमें अमेरिका और रूस को भी शामिल कर लिया गया।

शिखर सम्मेलन

- आसियान नेताओं का पहला शिखर सम्मेलन इंडोनेशिया के बाली में 1976 में हुआ था। मनीला में 1987 में हुए शिखर सम्मेलन में हर पांच साल बाद बैठक का फैसला लिया गया, लेकिन 1992 में सिंगापुर में तय किया गया कि इसके शीर्ष नेता हर 3 साल बाद मिलेंगे।
- वर्ष 2011 में हर साल सम्मेलन करने का फैसला किया गया। वर्ष 2008 में आसियन चार्टर के अस्तित्व में आने के बाद हर दो साल बाद शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।

दुनिया की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

- आसियान देशों का क्षेत्रफल 44 लाख वर्ग किलोमीटर है, जो धरती के क्षेत्रफल का तीन फीसदी है। इसके सदस्य देशों की कुल आबादी 64 करोड़ है जो दुनिया की कुल आबादी का 8.8 फीसदी है।
- वर्ष 2015 के आंकड़ों के अनुसार इन देशों की सम्मिलित जीडीपी 2.8 लाख करोड़ डॉलर है। इस लिहाज से यह अमेरिका, चीन, जापान, फ्रांस, और जर्मनी के बाद सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

संभावित प्रश्न

हाल ही में आर्थिक-सामाजिक विकास के साथ सांस्कृतिक संबंधों में मजबूती के लिए 31वें आसियान (दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों के संघ) शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस कथन के संदर्भ में क्षेत्रीय एकीकरण लाने में दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) की क्रमागत उन्नति और भूमिका का उल्लेख करें। (200 शब्द)

Recently, the 31st ASEAN Summit (Association of Southeast Asian Nations) was organized to strengthen cultural relations with economic-social development. In reference to this statement, mention the progressive advancement and role of South East Asian Nations Association (ASEAN) in bringing regional integration. (200 words)